

DPN 6985

Title : स्तोत्रे व विधिः STOTRA VA VIDHI

Run. No. 7710

Cat. No.

Micro. No.

Subject स्तोत्रे व विधिः Hymns & Ritual

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 6.7 x 16.8

Folios 8

Lines (in a page) 6

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

फणीन्द्रल वज्राचार्य

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Phaniendra Lalna Vajracarya

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyaasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

स्तोत्र संग्रहः

मकयाजध्वजणी॥ ३ ॥ दक्षिणवक्त्रकलिश्चशाश्वतचूदचूदः
नी॥ यश्चह्लानमयध्वजी॥ यश्चमुडाविह्वयिता॥ ४ ॥ निजाम्ना
धर्मगौरिज॥ आत्मनिजाशत्रासनः सायाचक्रस्ररावता॥ चण्ड
लिदीयवद्धजा॥ ५ ॥ महासूखाविसम्भवः॥ रुद्रकंदकान
धूयक॥ तच्छान्दह्वगमनं॥ तावैन्दवंदकागिनी॥ ६ ॥ मूलु
सद्यः॥ त्रिणीकाय॥ अलिकालिविशुद्धिका॥ चण्डजगीतिधर्मस्कन्ध

परान्तरवक्त्राचार्य

सर्वलोगविमुक्त सुनमन ऊविनिष्ठ बहवदीयिकका
नि धनकनकसमृद्धि ज्ञायते नाऊर्वेण शुभकवतगु
हस्मिन्कायमाशिकृत्वा ईसंखसर्वेकथागत अवि
ष्टेष्टुत्वादा ॥ कायविश्वधनस्वादा ॥ लादा धामिथ ॥ ई
वडाके विमलस्वादा ॥ ईवजसत्त्वमवे विप्रानुमानय
ईरुह ॥ खवनान खानमपुनदीयके नाय ॥ ई सर्वेक

आगत सुवश्रुधामस्वादा ॥ थाकासनयाय ॥ धन खान
वाय ॥ ईरुः मदा मधुमनवनम ॥ ईरुः मधुमनवा
नमः ॥ ईरुः मधुमनवनमः ॥ दान ॥ ईरुः यैष्टुविहाय
नमः ॥ ईरुः नैजवादीवायनम ॥ खवस ॥ ईरुः
अयनमादावनिनम ॥ धवन ॥ ईरुः ईरुः नवनम
॥ ईरुः ॥ ईरुः यादयदिवायनम ॥ खवकान ॥ ईरुः नादय

दीयाय नमः॥ स्वयं कांथं ॥ हुँ लाडय दीयाय नमः॥ ऊ
वकथं ॥ हुँ लाडय दीयाय नमः॥ ऊ वकन ॥ हुँ यगऊ
नलाय नमः॥ हवनं ॥ हुँ नयन नलाय नमः॥ स्वयं ॥
हुँ लयुध नलाय नमः॥ धवनं ॥ हुँ वस्त्री नलाय नमः॥
ऊ व ॥ हुँ शास्त्र नलाय नमः॥ स्वयं कान ॥ हुँ मावकन
लाय नमः॥ स्वयं कांथं ॥ हुँ लामणि नलाय नमः॥ ऊ व

कांथं ॥ हुँ नासर्व निधान नमः॥ ऊ वकान ॥ हुँ वैन
दाय नमः॥ दानं नथं ॥ हुँ मूसू योय नमः॥ दानं नका ॥
हुँ आः हुँ श्रीवज्र गुनवन नमः॥ दानं ॥ यक्षय दानयूज
॥ वडन नमः॥ मानू मय दीयाय ॥ निरु नाना नलम
माकृष्टुं कदन नदीन गुन आ वद्ध धमाया संध
त्यश्चरुथेवच नियानया मिरावन सैयूष्टुन नमः॥

लीलाज्योमंडल ॥ ॥ ॐ आः ह्रीं श्रीं मन्त्रवक्त्रं मन्त्रगुः
नृननयननकमलाय संस्था कुरु नावरा मनकनाय न
महं ॥ नमस्तु ३ नमी नमः कुरु कुरु त्वानमस्यामि गुण
नाथं सुमिहं ॥ यस्यायसादकिने ॥ कलिकात्मकत्व
नृनयरायनिकन ४ यनरुं काश्चकाना यत्पुत्रा नाविन
धर्मा सविलासमयं कस्मीनमः कुरु कुरु नियं गुनूराकः

नाय ॥ नमी वृद्धाय गुनूवं नमी धर्माय कायेन नमः ४ मे
द्याय मरुतु मे किं यायि सकने नमः ॥ सर्ववृद्धं नमस्या
मि धर्मा ३ दिनकायिर्न संद्य ३ नीलं संयने नृनरु
यनमी १ मुरु ॥ याय समष्टं युनिदं भयामि कायनवा
वा मनसा ३ कुरुत्वा युत्पं मनीनमनूमा दयामि नदं व
वाधोय निष्ठा मयामि नृनययमसनं युयामि काय

वनस्यायुक्तिरोकयामि संवृद्धमार्गश्चममाश्रयामि यो
 लोममययुषिधानविरुद्धः ॥ ॥ यनलंखवलिरावना
 ॥ ॐ आचमनं युक्तिरुच्चाह ॥ यूनकायकानं ॥ वायुम
 पुलं मदयनिनंजाताग्रिमपुलं मदयनिहं काननय
 सं जातवृलियनि वृहकृताकाजनं मेरुहृक्कादिकं य
 नियुनिनं ॥ वृंजोंडोंखं हं ॥ जोंमोंयांमोंवें ॥ जातयनामृक

यवयुदियवृयं वाकानंजितकृलिकाग्रिकायविलिनमा
 लाकृनादिकं अरिन्नवकानवपुं चात्राकृनदयनिहं
 जात वृहमपुलं नववृहमपुलाजात अकृनयमृनि
 नरं दशदिकलाकयालानांकषेथरु ॥ ॥ लोकाया
 लमडाकन ॥ ॐ हं जायस्वाहा ॥ ॐ यमायस्वाहा ॥
 ॐ वनूपायस्वाहा ॥ ॐ क्वनायस्वाहा ॥ ॐ ज्ञयस्वा

ब्रह्मसिद्धिस्तु क्रियाकार्थमहाबोधं शास्त्रं नमो भगवते ॥
 नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय ॥
 वसुधैव कुटुम्बकम् नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय ॥
 नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय ॥
 नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय ॥
 नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय ॥
 नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय ॥

१४. स्तोत्र संग्रह, फराही बरख वज्राचार्य

[illegible][illegible]

चत॥ जटामकुचनंदीलं विष्णुवडाडुचयुके॥ ॥ येऽस्मृडाकृ
तारुचणं॥ यन्मृडायतल्लवला॥ शतमूलुमालिकाचव॥ कयन्न
युनालयो॥ ॥ द्याद्येयम्मानिवासनी॥ रुग्मधुशयनमः सर्व
सारं॥ समायुक्त॥ भावसिद्धिः॥ दहिमः॥ ॐ तिष्ठामहाह
लोकस्य॥ ति॥ मुनि समाकः॥ ७॥ नमः॥ विद्याधनीदवी
नान्वायवीसुगतवनदा॥ यूजितवंतुलोक॥ सानूचकाद्वियद

गा॥ मञ्जितासर्वमत्या॥ सकार्थं॥ नकुवर्णनविकलकलिसं
वामशुक्तिदधानं॥ यो॥ बाष्पीविद्याधनीम॥ सतगुणकथिना
लोकवाङ्मास्नुदाना॥ ७॥ ॐ ति॥ विद्याधनीमुनि समाकः
रक्षाचकसमुनायनाशासंवरं मेहावीलं॥ वानाहीचायीआगि
णी॥ नमामि सर्वेश्वरं॥ आगिणीगणतु॥ धित॥ ॥ वज्रं॥
जाकिनीकादवी॥ दं॥ यानाकिकातथा॥ गज॥ यन्मयुक्त॥ मूर्तिदेवी

उवाहाउचूयीनी॥ २ ॥ चत्वारथमृगराष्टाद॥ कजाटावेचठमृय
 तिष्ठलकाकदन्दाका॥ यद्वाग्यडुकानना॥ ३ ॥ श्वानाशाकटिक
 यद॥ उमनसूकलानना॥ कजागज॥ मठाधीउ॥ यासंजमदूगीः
 का॥ ४ ॥ उमदद्विवक्रमुदयलशूजममथनि॥ दादस्यताम
 दादवी॥ याययिरुद्ध॥ वेवसि॥ ता॥ ५ ॥ नमः॥ स्फार्यसमाः
 वार्ह॥ आगिनीत्यनमानमः॥ सर्वे॥ सोर्द॥ समायूर्कभाद॥ सिः

द्विष्टुदहिम॥ ॥ ॐतिशाचकसंमूलवडावानाही॥ वि
 शुद्धिस्रुतिसमाय॥ ४॥ ७ ॥ नमः॥ शोकोलाय्याय॥ ॥ नो
 मिशावडावानाही॥ सम्यक्करुचूयीनी॥ संवृत्तियनमार्थेन॥ द
 कद्वयनमस्रुत॥ ८ ॥ सत्वद्वयविशुद्ध्यावरुजद्वयसमधि
 तं॥ महानागमयदहं॥ नकवर्कसमूर्द्धन॥ ९ ॥ वामयाष्ट
 श्रुतयत्र॥ खद्वांजायायविशुद्धिर्न॥ कयात्रसामृतायूल्ह॥ वाम